United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

शारीरिक संरचना और स्त्री सहानुभूति और स्वानुभूति: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. पवन कुमार
असोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
गोपाल राव पाटिल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज भैंसा
जिला निर्मल तेलंगाना
9848782540

Article Received:15-03-2025 Article Modified:01-05-2026
Article Accepted:05-05-2026 Article Published:06-05-2026
DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.2.49

केन्द्र और परिधि की अवधारणा को चुनौती देने वाले इस युग में हर परिधि को केन्द्र मानकर, उस पर सूक्ष्म अधययन पिछले कुछ दशकों से हो रहा है। परिणामस्वरूप कई स्थापित विश्वासों, मान्यताओं पर पुनर्विचार आरम्भ हुआ, एवं कई मिथक टूट रहे है अथवा टूट चुके हैं। कुछ ऐसे ही विश्वासों, मान्यताओँ के सम्बन्ध में चर्चा इस आलेख के माध्यम से करने का का प्रयास किया जा रहा है, जो स्त्री से मुख्यतया उसके शरीर एवं उसकी शारीरिक-जैविक संरचना से जुड़े हैं। इस चर्चा में पुरुष एवं महिलाकारों के विचारों को समान रूप से आधार रूप में लिया गया है। सहानुभूति बनाम स्वानूभूति में कौन अधिक श्रेष्ठ है, इस पक्ष को एक ओर रखकर बिल्कुल संतुलित दृष्टिकोण को अपनाया गया है।

स्वानुभूति और सहानुभूति के आधार पर स्त्री-चिन्तन से जुडे इस विषय को निम्न शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है—

- **जैविक संरचना और स्त्री**
- **शारीरिक क्षमता और स्त्री**
- **नेतृत्व-क्षमता और स्त्री**
- **यौनिकता और स्त्री**
- **भ्रूण का निर्माण और स्त्री**

जैविक संरचना और स्त्री- स्त्री, जैविक संरचना के विषय में पुरुष से श्रेष्ठ होती है और यह श्रेष्ठता उसे प्रकृति-प्रदत्त है। मानव मात्र के निर्माण में गुणसूत्रों का विशेष महत्व होता है। पुरुषों में XY एवं स्त्रियों में XX जोड़ा गुणसूत्र होते हैं।

गुणसूत्रों का यही अंतर स्त्री और पुरुष के स्वभाव में अंतर लाता है। स्त्रियों को 'लॉ एबाईडिंग'(कानून का पालन करने वाली) नागरिक मानते हुए अनामिका लिखती हैं, "पुरुषों का वाई फैक्टर उन्हें स्वभाव से उग्र, हिंसक बनाता है। स्त्रियों में यह होता ही नहीं, इसलिए वे शांतिप्रिय, स्नेही, कोमल और उच्च मानवीय गुण सम्पन्न होती हैं।"[1] जर्मेन ग्रीयर का भी मानना है कि "हिंसक अपराधों के दोषी कैदियों में XY गुणसूत्र वाले पुरुषों का अनुपात बहुत ज्यादा था।"[2] इसके साथ ही स्त्रियों का अनुकूलन भी कुछ ऐसा होता है कि वे शान्तिप्रिय ही अधिक होती हैं तथा उनसे अपेक्षा भी यही रखी जाती है।

जर्मेन ग्रीयर के अनुसार, "चिकित्सा शास्त्र के छात्र सीखते हैं कि नियमतः स्त्री का ढाँचा हल्का और छोटा होता है। उसकी हड्डियों की बनावट पुरुषों की तुलना में बच्चों जैसी होती है। यह बच्चों जैसी होने की बात स्त्री के पूरे शरीर के बारे में कही जाती है कि वह बालाकारी है, पुरुष का शरीर वय प्राप्त या वृद्धाकारी होता है। यह वर्णन और स्थिति के अनुरूप ढलने की क्षमता के रूप में विकासात्मक बढ़त को प्रदर्शित करता है।"[3] यानी कद-काठी की दृष्टि से स्त्री का पुरुष से छोटा होना भी उसकी कमजोरी न होकर एक विशेषता ही है।

अशोक झा, जो महिलाओं के शरीर की बनावट समाज के अधिक अनुकूल बताते हैं, का मानना है कि "महिलाओं के रक्त में शरीर की रक्षा-प्रणालियों को मजबूत बनाने वाली इम्यूनोग्लोबिन की मात्रा ज्यादा होती है जबकि पुरुषों के रक्त में हीमोग्लोबिन ज्यादा होता है।......शारीरिक रूप से पुरुष ज्यादा गठीला होता है। औसत महिलाओं की तुलना में वे दस प्रतिशत ज्यादा लंबे, बीस प्रतिशत ज्यादा भारी और तीस फीसदी ताकतवर होते हैं। लेकिन महिलाओं के शरीर की कुछ खूबियाँ इन विषमताओं को संतुलित कर देती हैं। महिलाओं का शरीर थकान को ज्यादा बर्दाश्त कर पाता है और वे ज्यादा समय तक बिना थके काम कर सकती हैं।"[4] मासिक स्राव के समय या रजस्वला स्त्री को पारम्परिक समाजों में बहुत ही निकृष्ट दृष्टि से देखा जाता है, परिणामसवरूप स्त्रियों में एक प्रकार की हीन भावना का संचार होता है। मासिक स्राव के संदर्भ में अशोक झा लिखते हैं, "मासिक स्राव की पीड़ा के कारण स्त्रियों में जिस चिड़चिड़ेपन के आने की बात कही जाती है, वह असल में उनके अंदर नई ऊर्जा का संचार करता है।"[5] यानी इस स्राव के पश्चात् वे पुनः ऊर्जस्वी हो जाती हैं।

स्त्री की जैविक संरचना दो आधारभूत कोशों एवं पुरुष की मात्र एक कोश से होने की बात बताते हुए रेखा कस्तवार लिखती हैं, "पुरुषों में पाया जाने वाला गुणसूत्र एक ऋणात्मक क्रिया है। मनुष्य जाति के नरों में करीब तीस रोग ऐसे पाए जाते हैं जो स्त्रियों में शायद ही कभी मिलते हैं।"[6] वे आगे बताती हैं, "टेस्टोस्टीरॉन और एंड्रोजन पुरुष में लैंगिक गुणों की वृद्धि करता है एवं एस्ट्रोजन स्त्री लैंगिक गुणों की। टेस्टोस्टीरॉन जहाँ पुरुषों में मेस्कुलाइन बॉडी, मोटी आवाज, बालों का आधिक्य और शारीरिक कठोरता का कारक होता है, एस्ट्रोजन और प्रोजस्ट्रोन स्त्री में चमकिली त्वचा, मासिक धर्म और अंडाशय की सक्रियता में सहायक होता है। स्त्रियों का सेक्स हार्मोन एस्ट्रोजन धमनियों को कड़ा होने से रोकने वाला और दिल की बीमारियों की संभावना को कम करने वाला होता है।"[7] ध्यातव्य है कि टेस्टोस्टीरॉन, जिसके बारे में कभी यह धारणा थी कि "वह सिर्फ पुरुषों में ही पाया जाता है, उसके स्त्रियों में भी पाए

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

जाने की बात सिद्ध हो चुकी है। यह हार्मोन उनमें कामेच्छा जगाने का काम भी करता है।"[8] यहाँ स्पष्ट है कि स्त्री की जैविक संरचना कई मायनों में पुरुष से श्रेष्ठ है जो उसे कई रोगों से बचाती है।

इस विशेष जैविक संरचना का ही परिणाम है कि पुरुषों की मृत्यु दर स्त्रियों से अधिक होती है, किन्तु दिखाई इसके विपरीत देता है। सरला माहेश्वरी के अनुसार, इसका मुख्य कारण "सामाजिक अवहेलना के अलावा कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि जीव-विज्ञान की दृष्टि से तो अपने जन्म-काल से ही लड़कियाँ लड़कों से ज्यादा मजबूत हुआ करती हैं।"[9] किन्तु सामाजिक ढाँचा कुछ ऐसा बना हुआ है जिसमें स्त्रियों को कमजोर ही माना जाता है।

शारीरिक क्षमता और स्त्री- शारीरिक क्षमता में भी स्त्री पुरुष से कमतर नहीं। अनामिका का मानना है कि "बुद्धि-बल और नैतिक बल में ही नहीं, दैहिक सामर्थ्य में भी स्त्रियाँ पुरुषों से बीस ही हैं। पुरुष शरीर प्रसव-पीड़ा जितनी गंभीर पीड़ा झेल पाने में अक्षम है।"[10] स्त्रियों की प्रसव-पीड़ा सहने की क्षमता और मातृत्व के गुण को रेखांकित कर महात्मा गांधी कहते हैं, "स्त्रियों द्वारा शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए उनका गर्भ-धारण एवं मातृत्व का अनुभव ही विशेष योग्यता है। अगर वे प्रसव-पीड़ा सह सकती हैं तो कुछ भी सह सकती हैं, कोई भी कष्ट उठा सकती हैं।"[11] अतः यह कहा जा सकता है कि प्रसव के दौरान होने वाली पीड़ा, पीड़ा की सीमाओं का अन्त है और इस पीड़ा को झेलने की क्षमता स्त्री में ही है।

सुकुमारता को सदा स्त्री से जोड़कर देखा जाता है एवं यह भी माना जाता है कि स्त्रियाँ दुर्बल होती हैं, अतः शारीरिक श्रम के लिए उपयुक्त नहीं। जॉन स्टुअर्ट मिल लिखते हैं कि "स्पार्टन महिलाओं को पुरुषों की भाँति ही शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया प्रशिक्षण दिया जाता था। यह इस बात का भी पर्याप्त प्रमाण है कि महिलाएँ शारीरिक श्रम के लिए अक्षम नहीं हैं।"[12] अतः स्त्री शारीरिक श्रम के लिए उपयुक्त है यह बात इतिहास सिद्ध है।

स्त्री-पुरुष की प्रतिरोधात्मक क्षमता को उजागर कर प्रभा खेतान लिखती हैं, "एक स्त्री की तुलना में पुरुष पाँच वर्ष कम जीता है, ज्यादा बीमार पड़ता है, ज्यादा हिंसक होता है और ज्यादा सही ढंग से आत्महत्या भी करता है।"[13] यहाँ पुरुषों द्वारा स्त्रियों से अधिक संख्या में आत्महत्या करने की बात दृष्टिगत है। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि पुरुष मानसिक क्षमता के मामले में स्त्रियों से कमतर ही होते हैं। इस विषय में लता शर्मा की भी शिकायत हैं कि "स्त्रियों के मानसिक बल और आत्मविश्वास के बारे में कभी सोचा ही नहीं गया।"[14] कुछ ऐसे ही विचारों को और भी स्पष्ट करते हुए जर्मेन ग्रीयर लिखती हैं, "मनुष्य प्रजाति के नरों में तीस रोग ऐसे पाए जाते हैं जो स्त्रियों में शायद ही कभी मिलते हों। स्त्रियों के शारीरिक रूप से पुरुषों से मजबूत होने के बहुत से प्रमाण हैं। वे ज्यादा जीती हैं और हर आयु -वर्ग में मरने वाले पुरुषों की संख्या स्त्रियों से ज्यादा होती है।"[15] ऐसे ही विचार व्यक्त करते हुए अशोक झा लिखते हैं, "स्त्रियों को हृदयाघात के दौरान पुरुषों की तरह भयानक दर्द नहीं होता। स्त्रियों में हृदयाघात की उम्र पुरुषों की उम्र से दस वर्ष अधिक होती है।"[16] वे आगे लिखते हैं "अगर किसी व्यक्ति को बिजली का झटका देना हो तो महिला अपने पुरुष साथियों के मुकाबले तनिक भी कम दृढ़ता का प्रदर्शन नहीं करती। अलग-अलग संस्कृतियों के बच्चों के अध्ययन से पता चला है कि तीन वर्ष की आयु तक दोनो ही लिंगों के बच्चों में बराबर आक्रामकता होती है और यही वह समय होता है कि जब लड़कियों को यह आभास कराया जाता है कि वह लड़की है और इसीलिए उसे

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

दबकर रहना चाहिए।"[17] अर्थात स्त्रियाँ प्राकृतिक रूप से कमजोर नहीं होती, उन्हें पालन-पोषण द्वारा कमजोर बनाया जाता है या उनका अनुकूलन किया जाता है कि वे स्वयं को कमजोर ही समझें।

नेतृत्व-क्षमता और स्त्री- रजिया सुल्तान से लेकर रानी लक्ष्मीबाई तथा झलकारी बाई तक या रानी दुर्गावती, अहिल्या बाई अथवा सरोजिनी नायडू से लेकर इंदिरा गांधी तक, तथा वर्तमान समय में राजनीति एवं अन्य क्षेत्रों में सक्रिय तथा सफल स्त्रियों को देख उनकी नेतृत्व-क्षमता का परिचय अनायास ही मिल जाता है। इस संदर्भ में जॉन स्टुअर्ट मिल मानते हैं कि “यदि अनुभव से, बगैर किसी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के कुछ निश्चित बात पता लग सकती है तो वह यह होगी कि महिलाओं को जो काम करने की अनुमति नहीं है, वही काम करने के लिए वे विशेष रूप से योग्य हैं; क्योंकि जो चंद अवसर उन्हें प्राप्त हुए, उनसे प्रशासन संभालने की उनकी क्षमता स्पष्ट हो गई है।”[18] अर्थात् उन्हें कभी उनकी योग्यता के अनुसार कार्य करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु जब भी नेतृत्व करने का अवसर मिला, उन्होंने अपनी क्षमता को सिद्ध किया। इस विषय में वे महारानी एलिज़ाबेथ और विक्टोरिया, फ्रांस के चार्ल्स आठ की बहन तथा चार्ल्स पंचम द्वारा नियुक्त नीदरलैंड की दो गवर्नर और ऑस्ट्रिया की मार्गरेट का उदाहरण देते हैं, जो अपने समय की सर्वाधिक योग्य राजनीतिज्ञों में शामिल थीं।

वर्तमान समय में विभिन्न निजी और सरकारी संस्थानों में स्त्रियाँ कार्य करती नजर आ रही हैं, जहाँ कभी-कभार उन्हें नेतृत्व करने का मौका भी मिलता है और जहाँ भी उन्हें यह मौका मिलता है, वहाँ वे अपनी छाप अवश्य छोड़ती ही हैं। इस विषय में अभय कुमार दुबे लिखते हैं, “अपने अधीनस्थों से काम लेने के मामले में वे पुरुष बॉस से भी ज्यादा कठोर और आक्रामक प्रदर्शन करती हैं,”[19] और ऐसे में अधीनस्थों के लिए कार्य को लेकर किसी भी प्रकार की कोताही संभव नहीं।

यौनिकता और स्त्री: स्त्रियों पर प्रायः ये आरोप लगाया जाता है कि वे मात्र एक लदा हुआ

गर्भ हैं, काम सम्बन्ध में उनकी भूमिका निष्क्रिय है और उन्हें लिंग का अभाव सदा सालता रहता है। इन सभी आक्षेपों का निराकरण करते हुए अनामिका लिखती हैं, “स्त्रियों की अपनी स्वतंत्र यौन-इच्छा है जो किसी कैस्ट्रेशन कॉम्प्लेक्स से पीड़ित नहीं और यौन सुख के लिए पुरुषों की मुखापेक्षी भी नहीं। क्लाइटोरिस नामक अंग विशेष बहुत सारे स्नायु तंत्रों की सिद्ध-पीठिका है जो इसे शिश्न से भी अधिक संवेदनशील और तृप्ति मुखी बनाता है। इसलिए यह मानना कि स्त्री सिर्फ पेसिव पार्टनर और लदा हुआ गर्भ है, सिरे से गलत है।”[20] अर्थात् स्त्री को यौन सुख बिना पुरुष या शिश्न के भी प्राप्त हो सकता है। इसके लिए उसे पुरुष पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं। जर्मेन ग्रीयर का भी मत है, “स्त्री के कामोत्तेजन का मूल उसके भग-शिश्न में है।”[21] यानी इस सुख के लिए वह किसी की मुखापेक्षी नहीं।

पुरुष में जहाँ यौन सुख का मूल शिश्न में ही होता है, वहीं प्रभा खेतान के अनुसार, “स्त्री की देह और उससे मिलने वाला सुख केवल किसी अंग-विशेष पर केन्द्रित नहीं। उसे मिलने वाला यौन सुख जितना सूक्ष्म और जटिल है, उतना ही व्यापक भी।”[22] इसके बाद भी स्त्री पर ‘लिंग ईर्ष्या’ या ‘पेनिस एन्वी’ होने के आरोप लगाए जाते हैं। इन आरोपों का खण्डन करते हुए अनामिका लिखती हैं, “यदि शिश्न का न होना ही स्त्रियों में कैस्ट्रेशन कॉम्प्लेक्स को जन्म

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

दे सकता है तो छातियों का न होना पुरुषों में भी यह कॉम्प्लेक्स देता होगा।"[23] "इरिगिरे ने .....कहा कि पुरुष की यौन तन्त्रियाँ तो एक ही स्थान पर केन्द्रित होती हैं जबकि स्त्री के शरीर में जगह -जगह यौन संवेदनाओं के रिले केन्द्र होते हैं।"[24] अर्थात् स्त्री इस संदर्भ में भी पुरुष से श्रेष्ठ ही ठहरती है।

भ्रूण का निर्माण और स्त्री- पुरुष-प्रधान समाज में कई मिथक या (अंध)विश्वास ऐसे हैं जो स्त्री को हीन और पुरुष को श्रेष्ठ साबित करते हैं। ऐसे ही मिथकों में एक मिथक भ्रूण से जुड़ा है, जिसके बारे में सदियों से यह मान्यता प्रचलित है कि भ्रूण के निर्माण में मुख्य योगदान पुरुष का ही होता है। राजेंद्र यादव इस सोच पर प्रहार करते हुए लिखते हैं कि "वे इस मुगालते को पाले रखते हैं कि नस्ल में माँ का तो कुछ होता ही नहीं, जो भी खून बच्चे में होता है, वह सिर्फ बाप का होता है। मानो माँ एक जड़ डिब्बा है जहाँ बाप का वीर्य पलता है।"[25] अर्थात् इस प्रक्रिया में स्त्री पूर्णतः निष्क्रिय होती है। क्षमा शर्मा का मत है, "पुरुष के वीर्य की स्तुति में तो कई स्त्रोत तथा श्लोक बनाए गए हैं, पर स्त्री के 'रजोधर्म' को (हिन्दू धर्म में) इन्द्र के श्राप की दुखद उपज माना गया है।"[26] उल्लेखनीय है कि सामाजिक रूढ़ियों के अनुसार, 'वीर्य' तो पूजनीय है किन्तु जिसकी वजह से स्त्री में उर्वर-शक्ति का आविर्भाव होता है, वह किसी के श्राप की दुखद उपज है।

समाज में व्याप्त पुरुष-वीर्य के वर्चस्व को निराधार बताते हुए राजकिशोर लिखते हैं, "गर्भाधान के लिए शुक्राणु ही नहीं, डिम्ब भी चाहिए और दोनों में से किसी का भी महत्व कम नहीं है। बल्कि शुक्राणु(लंबाई 0.04 से 0.06 मिलीमीटर) तो डिम्ब(व्यास 0.132 से 0.135 मिलीमीटर) की आकृति के सामने शिशु की तरह है और अरबों शुक्राणु 'राम नाम सत्य' हो जाते हैं, तब कहीं एक को डिम्ब में प्रवेश का मौका मिलता है। एक डिम्ब की आयु लगभग 21 दिन है, जबकि शुक्राणु की लगभग 24 घंटे। शुक्राणुओं की इस दयनीय अवस्था के बावजूद बिंदु मात्र वीर्य के नाश को मृत्यु तुल्य माना गया और पुरुष उसी तरह अपने को संतान का स्रष्टा मानता रहा जैसे वह ईश्वर को ब्रह्माण्ड का स्रष्टा होने का श्रेय देता रहा।"[27] यहाँ यह साफ़ हो जाता है कि भ्रूण के निर्माण में डिम्ब की भूमिका वीर्य के मुकाबले किसी रूप में कम नहीं है, बल्कि उससे कहीं ज्यादा ही है।

भ्रूण के निर्माण और विकास में वीर्य (पुरुष) और डिम्ब (स्त्री) की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए लीला दुबे चरक और सुश्रुत जैसे महान भारतीय चिकित्सकों का सहारा लेती हैं। लीला दुबे के अनुसार, "चरक संहिता में शरीर जन्म लेने के लिए निम्नलिखित विवरण दिया गया है। भ्रूण न माता से जन्म लेता है, न पिता से, न आत्मा से, न परमात्मा से, न ही पोषण से, न ही कोई ऐसा मन है जो उसको जोड़ता है... क्योंकि भ्रूण इन सभी कारकों के एक साथ सक्रिय होने से बनता है।" सुश्रुत संहिता (शरीर स्थान, अध्याय तीन, सूत्र 31) में भी बताया गया है कि पिता भ्रूण को शरीर के कठोर अंग प्रदान करता है जैसे सिर के बाल, मूंछ, दाढ़ी तथा शरीर के बाल, हड्डियाँ, नाखून, दाँत, शिराएँ; जबकि माता कोमल अंग प्रदान करती है, जैसे मांस (जिससे मांसपेशियाँ बनती हैं), रक्त, वसा, मज्जा, हृदय, नाभि, यकृत, झिल्ली, आँतें तथा मलाशय।"[28] यह विडम्बना ही है कि चरक और सुश्रुत जैसे चिकित्सकों को भारतीय अतीत की गौरवशाली परम्परा के प्रतीक के रूप में मानने वाला हमारा यह देश उनके द्वारा दर्शाई गई इन वास्तविकताओं की ओर कभी ध्यान नहीं देता।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

विभिनन विदवानों एवं विदुषियों दवारा स्त्री से जुड़े उपरोक्त विषयों को लेकर जो विचार तर्क सहित दिए गए है उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री का शरीर अथवा उसकी शारीरिक-जैविक सरंचना पुरुष से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। जितनी विशेषताएँ पुरुष के शरीर को प्रकृति ने प्रदत्त की है उतनी ही स्त्रियों को भी।

संदर्भ सूची-

1. अनामिका, स्त्री-मुक्ति: साझ चूल्हा, पृ. 73

2. जर्मेन ग्रीयर विश्वनाथ, बधिया स्त्री पृ. 29

3. वहीं पृ, 33

4. राजेन्द्र यादव एवं अर्चना वर्मा (सं) पितृसत्ता के नये रूप: स्त्री और भूमण्डलीकर(आलेख सबल स्त्री का शास्त्र, ले, अशोक झा) पृ, 192

5. वहीं पृ, 193

6. रेखा कस्तवार, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ 31

7. वहीं पृ, 31-32

8. वही, पृ. 32

9. सरला माहेश्वरी, नारी प्रश्न पृ, 92

10. अनामिका, स्त्री-मुक्ति: साझा चूल्हा, पृ. 20

11. राधा कुमार, स्त्री संघर्षों का इतिहास पृ. 174

12. जॉन स्टुअर्ट मिल, स्त्रियों की पराधीनता, पृ. 144

13. प्रभा खेतान (सं), भूमण्डलीकरण और स्त्री प्रश्न (आलेख -बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ, लेखिका - प्रभा खेतान)

14. लता शर्मा, औरत अपने लिए, पृ. 39

15. जर्मेन ग्रीयर, बधिया स्त्री, पृ. 95

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-2 ;April, May & June),2026

16. राजेन्द्र यादव एवं अर्चना वर्मा(सं) पितृसत्ता के नये रूप: स्त्री और भूमण्डलीकर(आलेख सबल स्त्री का शास्त्र, ले, अशोक झा) पृ, 195

17. वही, पृ. 194

18. जॉन स्टुअर्ट मिल, स्त्रियों की पराधीनता, पृ. 85

19. राजेन्द्र यादव एवं अर्चना वर्मा(सं) पितृसत्ता के नये रूप: स्त्री और भूमण्डलीकर(आलेख- 'भूमण्डलीकरण का प्रतिभूगोल : पितृसत्ता के नये रूप ', ले, अभय कुमार दुबे) पृ, 88

20. अनामिका, कविता में औरत, पृ. 10

21. जर्मन ग्रीयर, बधिया स्त्री, पृ. 88

22. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, पृ. 154

23. अनामिका, कविता में औरत, पृ. 44

24. रेखा कस्तवार, स्त्री-चिन्तन की चुनौतियाँ, पृ. 34

25. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, पृ. 50

26. क्षमा शर्मा, औरतें और आवाजें, पृ. 136

27. राजकिशोर, स्त्री-पुरुष: कुछ पुनर्विचार, पृ. 21

28. लीला दुबे, लिंगभाव का मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और प्रतिच्छेदी क्षेत्र, पृ. 135-136